पाठ 3: जयशंकर प्रसाद (आत्मकथ्य)

1. कवि परिचय (Author Introduction)

- **कवि का नाम:** जयशंकर प्रसाद (छायावाद के प्रमुख स्तंभ और प्रवर्तक)।
- **प्रमुख रचनाएँ:** कामायनी (महाकाव्य), आँसू, लहर, झरना (काव्य)। चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, अजातशत्रु (नाटक)।
- **विशेषता:** इनकी रचनाओं में कोमलता, माधुर्य, और ऐतिहासिक गौरव का चित्रण मिलता है।

2. पाठ का प्रसंग (Context of the Chapter)

मुंशी प्रेमचंद के संपादन में निकलने वाली पत्रिका **'हंस'** का एक 'आत्मकथा विशेषांक' निकलना था। प्रसाद जी के मित्रों ने उनसे भी अपनी आत्मकथा (Autobiography) लिखने का आग्रह किया। प्रसाद जी अपना जीवन बहुत साधारण मानते थे और अपनी निजी पीड़ाओं को सार्वजनिक नहीं करना चाहते थे। इसी असहमति के तर्क से यह कविता **'आत्मकथ्य'** रची गई, जो पहली बार 1932 में 'हंस' पत्रिका में छपी थी।

3. विस्तृत सारांश (Detailed Summary)

जीवन की नश्वरता: कवि कहते हैं कि मन रूपी भौंरा गुनगुना कर अपनी कहानी कह रहा है। जीवन एक पेड़ के समान है जिसकी पत्तियाँ (सुखद पल) मुरझा कर गिर रही हैं। यह संसार नश्वर है और यहाँ हर जीवन-कथा अंततः एक अधूरापन ही छोड़ जाती है।
उपहास का डर: कवि कहते हैं कि इस अनंत नीले आकाश (संसार) में असंख्य लोगों ने आत्मकथाएँ लिखी हैं, जिन्हें पढ़कर ऐसा लगता है मानो वे स्वयं अपना मज़ाक उड़ा रहे हों। कवि अपनी भूलों को बताकर जग-हँसाई नहीं करवाना चाहते।
रीति गागर (खाली जीवन): उनका जीवन एक खाली घड़े के समान है जिसमें कोई महान उपलब्धि नहीं है। उन्होंने अपने जीवन में जिन सुखों का सपना देखा था, वे हकीकत बनने से पहले ही दूर भाग गए।
स्मृति पाथेय (यादों का सहारा): अपनी प्रेयसी के साथ बिताई गई मधुर चाँदनी रातों की सुखद यादें ही अब उनके थके हुए जीवन के सफर का एकमात्र सहारा (पाथेय) हैं। कवि उन निजी पलों की उज्ज्वल गाथा दुनिया को नहीं सुनाना चाहते। अंत में वे कहते हैं कि उनकी व्यथाएँ (दुःख) अभी शांत सो रही हैं, उन्हें जगाना उचित नहीं है।

4. काव्यगत एवं साहित्यिक विशेषताएँ

- **भाषा:** अत्यंत शुद्ध और परिष्कृत **खड़ी बोली** (तत्सम शब्दावली से युक्त)।
- **शैली:** छायावादी और प्रतीकात्मक (Symbolic) शैली।
- **अलंकार:**
  - **मानवीकरण:** 'अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं', 'थकी सोई है मेरी मौन व्यथा'।
  - **रूपक:** 'स्मृति पाथेय' (यादों रूपी सहारा), 'रीति गागर' (खाली घड़े रूपी जीवन)।

5. पाठ का मूल भाव / संदेश (Central Theme)

यह कविता कवि की विनम्रता और सादगी को दर्शाती है। संदेश यह है कि व्यक्ति को अपने जीवन की साधारणता को स्वीकार करना चाहिए। अपनी निजी अनुभूतियों और पीड़ाओं का बाज़ार में तमाशा नहीं बनाना चाहिए। कुछ दुःख ऐसे होते हैं जिन्हें अपने भीतर सँजोकर रखना ही बेहतर होता है।

6. महत्त्वपूर्ण बिंदु (Key Points for Exam)

- **रीति गागर (खाली घड़ा):** यह कवि के साधारण और उपलब्धियों से रहित खाली जीवन का प्रतीक है।
- **स्मृति पाथेय:** 'पाथेय' का अर्थ है रास्ते का भोजन (सहारा)। कवि की सुखद यादें ही उनके जीवन-सफर का सहारा हैं।
- **अरुण कपोल:** प्रेयसी के लाल गाल, जो सुबह की लालिमा से भी अधिक सुंदर थे।
- **अभी समय भी नहीं:** कवि को लगता है कि अभी उन्होंने ऐसा कुछ महान नहीं किया है जिसे दुनिया को बताया जाए।

Schorbit